“ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश! अदालत जारी है में स्त्री संघर्ष”

“DHRUVSVAMINI EVM KHAMOSH! ADALAT JARI HAI MEN STREE SANGHARSH”

एम.फिल. हिंदी (तु.सा.)उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2014-15

शोधार्थी

राय साहब पाल

पंजीयन सं. : 2014/02/205/001

हिंदी एवं तुलनात्मकसाहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र)

भूमिका

स्त्री और पुरूष मानव के दो महत्व पूर्ण ध्रुव हैं। दोनों के पारस्परिक सहयोग से ही यह जीवन आगे बढ़ रहा है। विकास के लिए दोनों की सहभागिता आवश्यक है और दोनों के संबंध भी परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। वैदिक कालीन समाज मातृ प्रधान समाज था वहॉ स्त्रियों का सम्मान होता था, लेकिन आगे का समाज मातृ प्रधान समाज नहीं रह सका, विकास के साथ परिवर्तन हुआ। सार्वजनिक वस्तुओं के साथ व्यक्ति विरोध पर नियंत्रण स्थापित किया जाने लगा।स्त्री और स्त्री की यौनिकता पर भी नियंत्रण स्थापित किया गया। स्त्री जो अब तक अपना जीवन उन्मुक्त व स्वतंत्रता पूर्वक व्यतीत करती थीं, उस पर कई तरह के नियंत्रण स्थापित किए गये और इसी के साथ ही स्त्री की दासता का युग प्रारंभ होता है। जो आज तक किसी न किसी रूप में हमारे समाज में व्याप्त है। रामायण में सीता के चरित्र पर लांछन लगाकर उन्हें घर से निकाल देना, युधिष्ठिर का अपनी पत्नी द्रोपदी को बिना उनसे पूछे जुए में दांव पर लगा देना तत्कालीन पतियों का अपनी पत्नी पर मनमाने अधिकारों का प्रमाण मिलता है।

बौद्ध काल में नारियों की स्थिति भिक्षुणियों के रूप में ही स्वतंत्रता की रही हैं। कुछ नारियों ने भिक्षुणियों के रूप में ज्ञानार्जन किया। भिक्षुणियों के रूप में ही वे गृहबन्धनों से अलग हो गई और उन्होंने अपने निजी व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास कर लिया। मध्यकाल में नारी की स्थिति निम्न स्तर की ही दिखाई देती है। तत्कालीन नारी की स्थिति इतनी दयनीय थी कि वह घर की चार दीवारी में कैद होकर केवल पुरुष की भोग्या और उसकी निजी सम्पति बनकर रह गई।निर्गुण भक्तिधारा के कुछ संत कवियों ने नारी को साधना में बाधक समझकर उसे मुक्ति मार्ग का रोड़ा कहा तो कुछ अन्य संत कवियों ने नारी के उदात्त रूप को स्वीकार कर उसे पूज्य माना। सूफियों के लिए नारी या तो परमात्मा का नूर रही या फिर सती होकर आत्म त्रासदी में ही गरिमा पाने वाली विवश नारी रही। सगुन भक्ति के कवियों ने नारी को पत्नी एवं मातृ रूप की प्रशंसा की। इस दृष्टि से तुलसी दास का रामचरितमानस उल्लेखनीय है। नारी मुक्ति की संभावनाओं की तलाश कृष्ण काव्य में कुछ-कुछ दिखाई पड़ती है। सुरदास ने स्त्रियों द्वारा सगुण पर निर्गुण की विजय दिखा कर एक ओर उन्हें तार्किक और बौधिक दिखाया है तो दूसरी ओर उनके प्रेम को महत्व देकर सामन्ती प्रवृतियों को चुनौती

दी हैं कृष्ण भक्ति कवियों में एक और उल्लेखनीय प्रखर व्यक्तित्व मीराबाई का रहा है। जिसने तत्कालीन सामंती-सभ्यता का विरोध कर 'ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन'कहकर स्वयं ही अपनी मुक्ति का मार्ग तलाश किया है। रीतिकाल में नारी का उदात्त भाव कहीं पर भी दिखाई नहीं देता। तत्कालीन पुरुष की मानसिकता नारी के केवल बाह्य पक्ष कामिनी के रूप में उसके सौन्दर्य का वर्णन कर समाज में मात्र विलास-भावना ही बढ़ाया है।

आधुनिक काल में अंग्रेजी शासन व्यवस्था ने सम्पूर्ण भारतीय राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन की प्रभावित किया। पाश्चात्य शिक्षा सभ्यता तथा संस्कृति के संपर्क में आकर भारतीय समाज को परम्पराओं में परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। जिसका प्रभाव स्त्री की स्थिति पर भी पड़ा और यहीं से स्त्री जागरण की शुरुआत हुई। इसकाल में समाज सुधारकों ने स्त्री के मानवीय अधिकारों का प्रश्न उठाया। राजा राममोहन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फूले, पंडिता रमाबाई तथा महात्मा गाँधी आदि सुधारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिन्होंने बाल-विवाह, सती प्रथा, अशिक्षा आदि कुप्रथाओं का विरोध करके विधवा विवाह और नारी शिक्षा पर बल दिया।

भारतेंदु युग में राष्ट्रीय और सामाजिक जन-जागरण के साथ-साथ स्त्री की स्थिति पर भी ध्यान दिया गया। भारतेंदु के समकालीन कुछ नाटककारों ने नारी समस्या को प्रमुख मानकर नाटक लिखा।छायावाद में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के प्रसार से नारी के अन्दर की आत्महीनता की भावना धीरे-धीरे नष्ट होने लगी तथा उसमें आत्म गौरव के भाव जागृत होने लगे। महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़ियाँ' इसका प्रमाण है।

'ध्रुवस्वामिनी' एवं 'खामोश! अदालत जारी है' नाटकों का केन्द्रीय विषय स्त्री समस्या है। इन दोनों नाटकों में स्त्री जीवन तथा उसकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। दोनों नाटकों की नायिकाओं (ध्रुवस्वामिनी और बेणारे) को स्त्री चेतना का प्रतीक माना गया है। इन दोनों के माध्यम से पुरुषवादी

मानसकिता पर प्रहार किया गया है। दोनों नायिकाएं पुरुषवादी मानसिकता का खंडन करती हुई दिखाई गयी हैं। जिसका विश्लेषण मैंने अपने इस लघुशोध-प्रबंध में करने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय 'स्त्री चेतना और संघर्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' है। इसे पुन: तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय 'पितृसत्ता और स्त्री'है, जिसके अंतर्गत पितृसत्ता के रूपों को दिखाया गया है । पितृसत्ता के कारण स्त्री का शोषण किन-किन तरीकों से किया जाता है इसका विश्लेषण किया गया है। द्वितीय उप अध्याय 'स्त्री संघर्ष का इतिहास और स्वरूप है। इसमें स्त्री संघर्ष के इतिहास और उसके स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। तीसरा उप-अध्याय 'हिंदी नाटकों में स्त्री' है। इसमें भारतेंदु युग से लेकर समकालीन हिंदी नाटकों में स्त्री की जो स्थिति रही है उसी का आकलन किया गया है। दूसरा अध्याय ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश! अदालत जारी है में स्त्री है। यह अध्याय पुन: तीन उप-अध्यायों में विभाजित है। इसमें ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश अदालत जारी है में स्त्री की सामाजिक एवं परवारिक स्थिति, स्त्री पुरुष संबंध और स्त्री चेतना तथा उसके संघर्ष कोविश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। तीसरा अध्याय ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश अदालत जारी है का शिल्प है। यह अध्याय तीन उप अध्यायों – चरित्र चित्रण, भाषा व संवाद योजनाएं में विभाजित है, जिसके अंतर्गत पात्रों के चरित्र चित्रण नाटक की भाषा तथा पात्रों के आपसी संवादों को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

आभार

इस शोध लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने के लिये जिन विद्वानों,आत्मजनों का सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ उन सब के प्रति मैं हृदय से आभार वक्त करता हूँ| सर्व प्रथम मैं अपने गुरु डॉ.रुपेश कुमार सिंह के प्रति सदा आभारी हूँ जिनके मार्ग दर्शन में यह शोध कार्य पूरा हुआ|हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के

विभागध्यक्ष प्रो.सूरज पालीवाल एवं साहित्य विद्यापीठ के संकायाध्क्ष प्रो.कृष्ण कुमार सिंह और विभाग के सभी गुरुजनों को हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिनका स्नेह एवं प्रोत्साहन हमें समय-समय पर मिलता रहा|

इस शोध अध्ययन तक पहुचाने वाले मेरे माता-पिता (श्रीमती कलावती देवी एवं श्री सीताराम पाल) भाई डॉ.बबलू पाल, राजेश,विवेक, रामसेन बहन जडावती देवी, प्रियंका एवं पत्नी बबिता पाल के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें मुझे उच्च शिक्षा के लिए हमेशा प्रेरित किया|

मैं अपने अग्रज बृजेश चौहान, अमित गुप्ता, रविन्द्र, स्कन्द स्वामी, विजय, शशिकांत, शैलेन्द्र शुक्ल, यदुवंश के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही मैं अपने सभी मित्रों अजित कुमार, शिवकुमार पटेल, जयप्रकाश राम, धीरेन्द्र, अमोल एवं अमित कुमार के प्रति भी पुनः आभार व्यक्त करता हूँ|

विषयनुक्रमणिका

भूमिका i-iv

प्रथम अध्याय : स्त्री चेतना और संघर्ष की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 1-29

1.1 पितृसत्ता और स्त्री

1.2 स्ती संघर्ष का इतिहास और स्वरूप

1.3 हिंदी नाटकों में स्त्री

द्वितीय अध्याय : ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश अदालत जारी है में स्त्री 30-50

2.1सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति

2.2 स्त्री पुरुष संबंध

2.3 स्त्री चेतना एवं संघर्ष

तृतीय अध्याय: ध्रुवस्वामिनी एवं खामोश अदालत जारी है का शिल्प 51-68

3.1 चरित्र चित्रण

3.2भाषा

3.3संवाद योजनाएँ

उपसंहार 69-71

संदर्भ ग्रंथ- सूची 72